नक्सल प्रभावित क्षेत्र में संप्रेषण : वर्तमान स्थिति और प्रभाव

(छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग के विशेष संदर्भ में)

कुशाभाउ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के अन्तर्गत
जनसंचार विषय में पी–एच.डी. उपाधि हेतु

शोध की रूपरेखा

2012

शोध निर्देशक

(डॉ शाहिद अली)
एसोसिएट प्रोफेसर एवं
विभागाध्यक्ष, जनसंचार विभाग
कुशाभाउ ठाकरे पत्रकारिता एवं
जनसंचार विश्वविद्यालय

शोधकर्ता

संजय कुमार

शोध केंद्र : जनसंचार विभाग
कुशाभाउ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय
काठाडीह, रायपुर (छत्तीसगढ़)

नक्सल प्रभावित क्षेत्र में संप्रेषण : वर्तमान स्थिति और प्रभाव

(छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग के विशेष संदर्भ में)

प्रस्तावना

संप्रेषण मानव की मूलभूत आवश्यकता है। संप्रेषण के द्वारा ही मानव अपनी सूचनाओं,विचारो और भावनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। प्रभावी संप्रेषण के बगैर मानव जीवन और विकास की कोई भी प्रक्रिया सफल सिद्ध नही हो सकती। संप्रेषण के द्वारा ही संस्कृति भी सदा प्रवाहमान रहती है। प्रसिद्ध संचार शास्त्री सी.एल. लायड ने भी कहा है –

....संप्रेषण ही मानव समाज की संचालन प्रक्रिया को संभव बनाता है...

मनुष्य अपने ज्ञान और अनुभव को विरासत में प्राप्त हुई पारंपरिक संस्कृति में जोड़कर अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करता है। इस प्रकार पारंपरिक संस्कृति काल के प्रवाह के साथ समृद्ध होती चली जाती है। यही वजह है कि मानव समाज में संप्रेषण की प्रक्रिया इसके आरंभिक काल से विद्यमान रही है। मानवीय समूहो में सामाजिक अन्तर्क्रिया की प्रक्रिया वाणी,भाषा,संकेत अथवा लिपि के माध्यम से आदिकाल से ही संपन्न होती रही है। संप्रेषण के उच्च रुप,जिसे भाषा अथवा लिपि कहते हैं, के माध्यम से ही मानव एक दूसरे से अपने विचारों, अनुभवों, विश्वास और भावनाओं के आदान–प्रदान की समान क्रिया–कलापों तथा भावनाओं को जन्म देने में सफल हुआ है। लिहाजा मानव समूहों में संप्रेषण एकता तथा संस्कृति की निरंतरता के संचरण का मुख्य तत्व है।

संप्रेषण को अंग्रेजी में कम्युनिकेशन कहा जाता है। कम्युनिकेशन शब्द की उत्पत्ति कम्युनिको शब्द से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ है– साझेदारी अर्थात अनुभवों, भावों, विचारों और जानकारियों की साझेदारी या आदान–प्रदान करना।

इस प्रकार संप्रेषण, संदेश, सूचना, भावना या जानकारी को प्रसारित करने और दो पक्षों के बीच आपसी सहमति पैदा करने की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को संदेश भेजा जाता है, जो कि संदेश को ग्रहण करता है और उसका प्रत्युत्तर देता है। दूसरे शब्दों में कहें तो सूचनाओं, विचारो, संदेशो अथवा भावनाओं का संप्रेषण खास व्यक्तियों या निश्चित व्यक्तियों में होता है। इसके आदि और अंत को हम जानते हैं। संप्रेषण प्रभावशाली तब होता है जब संदेश ग्रहण करनेवाला संदेश को उसी अर्थ में समझे, जिस अर्थ में भेजनेवाला उसे भेजता है।

समाज, देश और विश्व समुदाय में प्रभावी संप्रेषण की जरुरत और महत्ता को बेलग्रेड में 1980 में '' संप्रेषण के अधिकार ''पर हुए यूनेस्को सम्मेलन के आधार पर भी समझा जा सकता है। इस सम्मेलन में पारित प्रस्ताव में कहा गया है '' आम जनता, जातीय और सामाजिक समूहों के संप्रेषण के अधिकार का सम्मान करना चाहिए। इनकी सूचना के स्रोत तक पहुंच हो, संप्रेषण प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी हो।''

भारत के संविधान की मूल भावना में भी संप्रेषण के अधिकार को संरक्षित करने की मंशा स्पष्ट होती है। संविधान के मौलिक अधिकार और संविधान से अनुच्छेद 19(1)(अ) भी मनुष्य के जनतांत्रिक स्वतंत्रताओ को संरक्षित करता है,जिसमें विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता यानी,एक नागरिक को मत, राय, निर्णय खुले रुप से प्रकट करने का अधिकार, अपने विचार किसी भी दृश्य अथवा अन्य माध्यम से प्रकट करने का अधिकार और अपने साथ ही अन्य व्यक्तियों के मत प्रकट करने का अधिकार और सामूहिक साझेदारी हेतु इकट्ठा होने, सभा–सम्मेलन करने और संगठन खड़ा करने का अधिकार शामिल है। परन्तु सवाल यह है कि

– क्या नक्सल प्रभावित क्षेत्र के लोग संविधान के मूल भावना के अनुरुप स्वतंत्रता पूर्वक उपरोक्त अधिकारों का उपयोग कर पा रहे हैं ?

– क्या वे नैसर्गिक रुप से संप्रेषण प्रक्रिया को अंजाम दे पा रहे है ?

– क्या नक्सल प्रभावित ईलाकों के विकास की प्रक्रिया में संप्रेषण प्रभावी भूमिका में मौजूद है ?

1967 में पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी से शुरु हुए नक्सल आंदोलन को 2006 में प्रधानमंत्री द्वारा देश की आंतरिक सुरक्षा की सबसे बड़ी समस्या बताए जाने के बाद, मौजूदा दौर में नक्सल समस्या को देश के सबसे बड़े खतरे के रुप में रेखांकित किया जा रहा है। केन्द्र के साथ–साथ राज्य सरकारें भी मानती हैं कि यदि इस समस्या को रोका नही गया तो आनेवाले दिनों में इस समस्या से निजात पाना और मुश्किल हो जाएगा। यही वजह है कि केन्द्र के साथ ही राज्य सरकारों द्वारा भी ठोस कार्ययोजना के तहत नक्सलियों पर नियंत्रण करने के लिए कोशिशें की जा रही हैं। इसी कड़ी में देश के तमाम नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर अर्धसैनिक बलों

की तैनाती की गई है। केन्द्र सरकार द्वारा नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में भेजे गये अर्धसैनिक बलों और राज्य सरकार के बलों द्वारा प्रभावित क्षेत्रों में लगातार आपरेशन चलाये जा रहे हैं।

इधर नक्सलियों द्वारा जारी उत्पात और हिंसा भी लगातार कायम है । नक्सल समस्या से वर्तमान में बिहार, झारखंड, आन्ध्रप्रदेश, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र सहित देश के चौदह राज्य प्रभावित हैं । इसमें छत्तीसगढ़ राज्य भी शामिल है। पिछले कुछ वर्षों में छत्तीसगढ़ में लगातार बड़ी नक्सली घटनाएं हुई हैं। 9 मई 2012 को केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री जितेन्द्र सिंह द्वारा सदस्य अनिल माधव दवे के पश्न के जवाब में दिये गये उत्तर के अनुसार देश में वर्ष 2010 में नक्सल हिंसा और मुठभेड़ में कुल 720 आम नागरिक और 285 सुरक्षाबल के जवान मारे गये। 2011 में यह आंकड़ा 467 और 142 था, जबकि 30 अप्रैल 2012 तक नक्सल हिंसा और मुठभेड़ में 101 आम नागरिक और 61 सुरक्षाबल के जवानों की मौत हो चुकी है। इस अवधि में अकेले छत्तीसगढ़ राज्य में वर्ष 2010 में नक्सल हिंसा और मुठभेड़ में कुल 171 आम नागरिक और 172 सुरक्षाबल के जवान मारे गये। 2011 में यह आंकड़ा 124 और 80 था, जबकि 30 अप्रैल 2012 तक नक्सल हिंसा और मुठभेड़ में छत्तीसगढ़ राज्य में 16 आम नागरिक और 15 सुरक्षाबल के जवान नक्सल हिंसा के शिकार हो चुके हैं । छत्तीसगढ़ राज्य के गृहमंत्री द्वारा दस फरवरी दो हजार नौ को राज्य विधानसभा में दिए गए जवाब के अनुसार एक अप्रैल दो हजार सात से पन्द्रह जनवरी दो हजार नौ तक की अवधि में राज्य में कुल 1190 नक्सली वारदातें हुईं जिसमें 277 नागरिक, 49 एसपीओ और 154 पुलिसकर्मियों की मौत हुई। नक्सलियों ने वर्ष दो हजार आठ में ही 556 हिंसक वारदातों को अंजाम दिया जिसमें सर्वाधिक 182 घटनाएं बीजापुर जिलें में घटित हुईं जबकि नक्सलियों ने दंतेवाड़ा में 133, नारायणपुर में 93, बस्तर में 40 और कांकेर में 77 हिंसक घटनाओं को अंजाम दिया।

1980 में ही पीपुल्स वार ग्रुप की सेन्ट्रल कमेटी ने स्पष्ट कर दिया था कि संपूर्ण बस्तर और उससे लगे आन्ध्र प्रदेश के अदिलावाद, करीमनगर, खम्मम, ईस्ट गोदावरी, महाराष्ट्र के गढ़चिरोली, मध्य प्रदेश के बालाघाट और उड़ीसा के कोरापुट तथा मलकानगिरी को मिलाकर अलग दण्डकारण्य राज्य की स्थापना की जाएगी। इसके साथ ही नेपाल से कन्याकुमारी तक नक्सलियों के प्रस्तावित रेड कॉरिडोर(लाल गलियारा)बनाने की योजना भी सर्वविदित है। खास बात यह है कि नक्सलियों की प्रस्तावित दोनों ही योजनाओं का केन्द्र विन्दु या हृदय क्षेत्र छत्तीसगढ़ का अबूझमाड़ है। करीब दस हजार वर्ग किलोमीटर में फैले सघन वन क्षेत्र अबूझमाड़ को नक्सलियों के सबसे सुरक्षित गढ़ के रूप में भी जाना जाता है।

छत्तीसगढ़ में नक्सलियों का प्रवेश अस्सी के दशक में माना जाता है। इसके बाद से लगातार नक्सलियों ने राज्य में अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाया है। नक्सली घटनाओं में भी बेतहाशा वृद्धि हुई है। दरभागुड़ा, रानीबोदली, तालमेटला, सिंगारम जैसी घटनाओं ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया है। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में लगातार बढ़ती हिंसा और सुरक्षाबलों की कार्रवाई के बीच प्रभावित क्षेत्रों में भय, आतंक और अविश्वास का ऐसा वातावरण बन गया है जो संप्रेषण की प्रभावी प्रक्रिया को बाधित कर रहा है। प्रभावित क्षेत्र में संकेतीय बाधाएं तो दिखाई देती ही हैं, संप्रेषण की वैयक्तिक और मनोवैज्ञानिक बाधाएं भी चरम पर प्रतीत होती हैं। सामाजिक–आर्थिक पिछड़ेपन, भय, नक्सली हिंसा और आतंक तथा अतिशय संवादहीनता की स्थिति में संप्रेषण की वास्तविक वर्तमान स्थिति और उसके नक्सल प्रभावित क्षेत्र में पड़नेवाले अल्पकालिक और दीर्घकालिक प्रभाव का अध्ययन करना मौजूदा समय में नक्सल प्रभावित क्षेत्र की बड़ी जरुरत है। इस बात की भी पड़ताल करने की जरुरत है कि नक्सल समस्या के समाधान में प्रभावी संप्रेषण की क्या सकारात्मक भूमिका हो सकती है और नक्सल हिंसा को रोकने और प्रभावित क्षेत्र में विकास की प्रक्रिया को तेज करने के लिए संप्रेषण के किस तरह की पद्धति और तकनीक की जरुरत है। शोध के दौरान इन सभी तथ्यों को केन्द्र में रखकर सभी परीक्षण और अनुसंधान किया जायेगा।

इस क्षेत्र में पूर्व में किया गया अध्ययन

जनसंचार के विद्यार्थी और शोधार्थी होने के कारण राज्य की सबसे बड़ी समस्या के रूप में नक्सल हिंसा और प्रभावित क्षेत्र में संप्रेषण की स्थिति मुझे हमेशा सोचने–समझने के लिए विवश करती रही है। यही बजह है कि समस्या को समग्रता से समझने के लिए मैंने उपलब्ध साहित्य के अध्ययन के साथ ही जमीनी सच्चाई के बीच भी नक्सल समस्या के कारणों को समझने की कोशिश की है। इस क्रम में मैने पहुंच विहीन अबूझमाड़ के जंगलों में और अन्य प्रभावित ईलाकों में रहकर वहां के लोगो की संप्रेषण प्रवृति, संचार माध्यमों की उपलब्धता और संवादहीनता के बीच आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक स्थितियों पर पड़नेवाले प्रभावों को समझने की भी कोशिश की है। बतौर शोधार्थी मैंने क्षेत्र में तैनात वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों, सुरक्षा बलों के प्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों और दण्डकारण्य क्षेत्र में सक्रिय वरिष्ठ नक्सल नेताओं से साक्षात्कार कर समस्या के मूल पक्ष को भी जानने–समझने की कोशिश की है। जनसंचार के विद्यार्थी होने के कारण से समस्या के संदर्भ में संप्रेषण की भूमिका हमेशा ही मेरे विचार और अध्ययन का केन्द्र बिन्दु रहा है।

शोध का उदेश्य

प्रस्तावित शोध कार्य का मुख्य उदेश्य है....

1.नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में संप्रेषण की मौजूदा स्थिति का अध्ययन करना।

2. नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में संप्रेषण–माध्यमों की वर्तमान स्थिति का आंकलन करना।

3.नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में लोगों की संप्रेषण अभिरुचियां और संप्रेषण के प्रभावी उपकरणों का पता लगाना।

4.नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में संप्रेषण प्रक्रिया को प्रभावित करनेवाले कारकों की पहचान करना।

5.नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में संप्रेषण की समस्या से उत्पन्न स्थितियों की पहचान करना।

6. नक्सल प्रभावित क्षेत्रों की समस्या समाधान और विकास के लिए उचित संप्रेषण प्रक्रिया की पहचान करना।

प्रस्तुत अध्ययन के क्षेत्र में योगदान

मेरे द्वारा किए जानेवाले शोध की विषय–वस्तु समस्या के विभिन्न पहलुओं की पड़ताल के साथ ही समाधानमूलक भी होगा। शोध के उपरान्त निकले निष्कर्षों से समस्या समाधान की दिशा में बनाई जानेवाली विभिन्न कार्य–योजनाओं में मदद मिलेगी। इसके साथ ही नक्सल प्रभावित इलाकों के आर्थिक,राजनैतिक और सामाजिक विकास में संप्रेषण की वांछित भूमिका और प्रभावित क्षेत्र के लोगों की अपेक्षाएं भी लोगों के सामने आ पायेंगी। चूंकि शोध का चयनित क्षेत्र व्यापक और वैज्ञानिक पद्धतियों पर आधारित होगा लिहाजा निष्कर्षों के आधार पर समस्या के समाधानमूलक नीति–निर्धारण में मदद मिलेगी और समस्या के मूल कारण भी सामने आ पायेंगे।

शोध पद्धति

शोध को वैज्ञानिक तथ्यों एवं तर्कों के अनुसार पुष्ट किया जाना चाहिए तभी शोध की सार्थकता एवं परिणाम सिद्ध होते है। प्रस्तुत शोध कार्य में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों से जरुरी आंकड़े एकत्रित किये जायेंगे। प्राथमिक स्त्रोत के आंकड़ो के एकत्रीकरण के लिए साक्षात्कार अनुसूची और नियंत्रित अवलोकन पद्धति का उपयोग किया जायेगा ताकि शोध समस्या के मूल कारणों की पहचान कर नक्सल प्रभावित क्षेत्र में संप्रेषण की स्थिति और प्रभाव का पता लगाया जा सके। शोध समस्या के क्षेत्र की व्यापकता और उस संबंध में राष्ट्रीय दृष्टिकोण का पता लगाने के लिए समस्या से संबंधित देश के जाने–माने विशेषज्ञों, पुलिस और प्रशासन के अधिकारियों, जन आंदोलनकारियों और राजनेताओं का साक्षात्कार भी किया जायेगा, जो अध्ययन प्रक्रिया की दूसरी महत्वपूर्ण सहायक पद्धति होगी।

शोध प्रक्रिया के तहत छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग के सभी सात जिलों के 15 सर्वाधिक नक्सल प्रभावित तहसीलों को शामिल किया जायेगा। छत्तीसगढ़ के 13 जिले केन्द्र सरकार के एसआरई (सिक्युरिटी रिलेटेड एक्सपेंडिचर) योजना में शामिल है। जिसमें बस्तर संभाग के सात जिलों के कोंटा, सुकमा, छिंदगढ़, उसूर, बीजापुर, भोपालपट्टनम, भैरमगढ़, गीदम, बास्तानार, दरभा, ओरछा, नारायणपुर, कोयलीबेरा, अन्तागढ़ और कोंडागांव ऐसे तहसील हैं, जिसे सर्वाधिक नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में शामिल किया जाता है। इन्हीं तहसीलों से उद्देश्य मूलक दैव निदर्शन पद्धति से तथ्यों का संकलन किया जायेगा। तथ्य संकलन के लिए चयनित तहसीलों से बीस–बीस लोगों से प्रश्न पुछकर अनुसूचि के माध्यम से उपयोगी जानकारी एकत्रित की जायेगी। तथ्य संकलन में पूरे तहसील के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व शामिल हो जाये इसके लिए सभी 20 लोगों को 10–10 के दो वर्गों में बांटा जायेगा। पहले दस लोगों में तहसील मुख्यालय में अलग–अलग क्षेत्रों से आये शिक्षक,वकील,अधिकारी,कर्मचारी और पुलिसकर्मी शामिल होंगे जबकि दूसरे दस लोगों का चयन किसी दुरस्थ साप्ताहिक बाजार में विभिन्न गांव से आये हुए लोगो में से दैव निदर्शन पद्धति से किया जायेगा।

प्राकल्पना

शोध के विषय में मेरी प्राकल्पना यह है कि –

1.नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में संप्रेषण की गंभीर समस्या एवं बाधाएं विद्यमान हैं।

2.नक्सल प्रभावित क्षेत्र होने के कारण संप्रेषण माध्यमों की पहुंच से छत्तीसगढ़ के कई हिस्से वंचित है।

3.नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में हिंसा एवं तनाव,संप्रेषण की स्वभाविक प्रक्रिया को प्रभावित करता है।

4.प्रभावी संप्रेषण के अभाव में नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में विकास अवरुद्ध है।

5.नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में संप्रेषण की पारंपरिक शैली विद्यमान है।

6.प्रभावी संप्रेषण से नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में विकास की प्रक्रिया को गति दी जा सकती है।

उपलब्ध साहित्य का पुनरावलोकन

किसी भी शोध कार्य के उदेश्यों को पूरा करने के लिए पूर्व में किए गए शोध–कार्यों एवं विषय से संबंधित साहित्यों के विशद अध्ययन की जरूरत होती है। प्रस्तुत विषय से संबंधित शोध कार्य राज्य में अब तक नही हुआ है, लेकिन समस्या से संबंधित साहित्य की एक पूरी श्रृखला है जो प्रस्तावित शोध कार्य में आधार स्तंभ के रूप में काम करेंगे। इस नए शोध कार्य में जिन उपलब्ध साहित्य का अध्ययन किया जाना है वे संदर्भ ग्रंथ सूची में शामिल हैं।

प्रस्तुत अध्ययन का अनुमानित निष्कर्ष

प्रभावी संप्रेषण नक्सल प्रभावित क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। प्रभावी संप्रेषण के माध्यम से न केवल नक्सल प्रभावित क्षेत्र की बुनियादी और ज्वलंत समस्याओं को जनता के सामने लाया जा सकता है, बल्कि उन समस्याओं को दूर कर वर्षों से अपने मूलभूत अधिकारो और सुविधाओं से वंचित लोगों तक उनका वाजिव हक भी पहुंचाया जा सकता है। लेकिन दूर्भाग्य से मौजूदा स्थिति इसके विपरित प्रतीत होता है। नक्सल प्रभावित क्षेत्र में संप्रेषण में अनेकानेक बाधाएं और समस्याएं है जिसकी वजह से अनेकबार प्रेषक द्वारा प्रेषित संदेश ठीक उसी तरह से प्राप्तकर्ता तक नही पहुंच पाता है,जैसा कि वह अपने मूल स्वरुप में होता है। कई बार तो संदेश का अर्थ पूरी तरह से बदल जाता है। प्रभावित क्षेत्र में संप्रेषण,विशेषकर अन्तर सांस्कृतिक संप्रेंषण की प्रक्रिया पूरी तरह से बाधित प्रतीत होता है और इसका व्यापक दूष्परिणाम प्रभावित लोगों के जनजीवन पर पड़ता हुआ दिख रहा है। शोध के उपरान्त निकले निष्कर्षों से समस्या समाधान की दिशा में बनाई जानेवाली विभिन्न परियोजनाओं में मदद मिलेगी । इसके साथ ही नक्सल प्रभावित ईलाकों के आर्थिक,राजनैतिक और सामाजिक विकास में संप्रेषण की वांछित भूमिका और प्रभावित क्षेत्र की लोगों की अपेक्षाएं भी समाज के सामने आ पायेंगी।

ग्रंथ सूची

1. शुक्ल,डा.कृष्णानंद,आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियां,राधा पब्लिकेशन्स,4231/1 अंसारी रोड,दरियागंज,नई दिल्ली–110002,फोन–23247003,23254306.
2. सक्सेना,विवेक एवं सुशील राजेश,नक्सली आंतकवाद,प्रभात प्रकाशन4/11,आसफ अली रोड,नई दिल्ली–110002.
3. राजकिशोर,माओवाद,हिंसा और आदिवासी,वाणी प्रकाशन,4695/21 ए,दरियागंज,नई दिल्ली–110002.
4. तलवार,वीर भारत,नक्सलबाड़ी के दौर में,अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स(प्रा.) लि.4697ध्3,21 ए,अंसारी रोड,दरियागंज,नई दिल्ली,फोन–23281655.
5. मश्र,कल्पना,माओ के बाद चीन में मार्क्सवाद,ग्रथशिल्पी(इंडिया) प्रायवेट लिमिटेड बी–7,सुभाष चौक,लक्ष्मी नगर,दिल्ली.
6. कुमार,नरेन्द्र,माओ उनका समय और संघर्ष,संवाद प्रकाशन,आई–499,शास्त्री नगर,मेरठ–250004(उत्तर प्रदेश).
7. देवी,महाश्वेता,एवं त्रिपाठी,अरुण कुमार,माओवादी या आदिवासी,वाणी प्रकाशन,4695,21 ए,दरियागंज,नई दिल्ली–110002.
8. सिंह,प्रकाश,नक्सलिज्म इन इंडिया,रुपा.कंपनी,07/16,अंसारी रोड,दरियागंज,नई दिल्ली,2006
9. चक्रवर्ती,सुदीप,रेड सन, ट्रेवल्स इन नक्सलाईट कंट्री,पेंगुईन बुक्स इंडिया प्रा.लिमिटेड,11 कम्युनिटी सेंटर,पंचशील पार्क,नई दिल्ली,2008.
10. सोर्ट,फिलीप,माओ ए लाईफ,जांन मुरी पब्लिकेशन,338 इस्टन रोड,लंदन.
11. सिंह,प्रकाश,कोहिमा टू कश्मीर,रुपा.कंपनी,07/16,अंसारी रोड,दरियागंज,नई दिल्ली,2000
12. निपोलियोनी,लोरेट्टा,मोडर्न जिहाद,ट्रैसिंग द डांलर बिहाइंड द टेरर नेटवर्क,प्लूटो प्रेस,लंदन,2008.
13. नायपाल,वी.एस,माटी मेरे देश की,प्रभात प्रकाशन,4/9 आसफ अली रोड,नई दिल्ली,2004
14. शुक्ल,डा.हीरालाल,प्राचीन बस्तर अर्थात दंडकारण्य का सांस्कृतिक इतिहास,विश्व भारती प्रकाशन,धनवटे चेम्बर्स,सीताबर्डी,नागपुर,1978.
15. शुक्ल,डा.हीरालाल,बस्तर का मुक्तिसंग्राम,मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी,रविन्द्र नाथ ठाकुर मार्ग,बानगंगा,भोपाल,2007
16. चौरे,डा.नारायण,आदिवासियों के घोटूल,विश्व भारती प्रकाशन,धनवटे चेम्बर्स,सीताबर्डी,नागपुर,2006.
17. शुक्ल,पंडित केदारनाथ,बस्तर भूषण,नवकार प्रकाशन,बालाजी मार्ग,राजापारा,कांकेर,छत्तीसगढ़,2005.
18. सक्सेना,डा.सुधीर,गुंडाधूर,मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी,रविन्द्र नाथ ठाकुर मार्ग,बानगंगा,भोपाल,2003.
19. बेहार,डा.रामकुमार,बस्तर एक अध्ययण,मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी,रविन्द्र नाथ ठाकुर मार्ग,बानगंगा,भोपाल,1995.
20. लाला जगदलपुरी,बस्तर इतिहास एवं संस्कृति,मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी,रविन्द्र नाथ ठाकुर मार्ग,बानगंगा,भोपाल,2007
21. साहु,नारायण,अबुझमाड़िया और अबुझमाड़,वैभव प्रकाशन,280,सेक्टर–4,दीनदयाल उपाध्याय नगर,रायपुर,2004.
22. दूबे,डा.के.सी.,ए प्लान फांर द डेवलपमेंट आंफ द अबुझमाड़ियाज, ट्राईबल रिसर्च एंड डेवलपमेंट इंस्टीच्यूट,भोपाल,1984.
23. माओईज्म, विकीपीडिया द फ्री इनसाईक्लोपीडिया
24. नैयर,रमेश,संतुलन राष्ट्रीय पाक्षिक,अक्टूबर 2005
25. दण्डकारण्य समाचार 1959–2003,समाचार प्रेस,वृंदावन बाग,जगदलपुर,2003.
26. प्रभात,जनवरी–मार्च 2006
27. भारत के गर्भ मे गृहयुद्ध,इंडिपेंडेंट सिटिजन इनिशियेटिव,जुलाई 2006.
28. सलबा–जुडूम शांति अभियान या सैनिक कार्यवाही,पीयूसीएल,वनिता आंफसेट,रायपुर,2006.
29. नक्सलवाद बनाम सलबा–जुडूम,जमीनी सच्चाईयां,हिन्दुस्थान समाचार,बाम्बे मार्केट,प्रथम तल,जीई रोड,रायपुर,2007.
30. गुप्ता,डा.बलदेव राज,मास कम्युनिकेशन एंड डेवलपमेंट,विश्वविद्यालय प्रकाशन,चौक,वाराणसी,2007
31. मुखर्जी,रविन्द्र नाथ,सामाजिक शोध व सांख्यिकी,विवेक प्रकाशन,7 युए,जबाहर नगर,दिल्ली–7,2007.
32. कुमार,सुनील,नियोगी और नक्सलवाद,इतवारी अखबार,पगारिया कांम्पलेक्स,न्यू बस स्टैंड,पंडरी,रायपुर.
33. मिश्रा,सम्बिट एवं अली,डां.शाहिद,रिसर्च मैथोडोलांजी इन मैनेजमेंट एंड कम्युनिकेशन,युनिवर्सल बुक डिपो,जयपुर
34. वैक्लपिक सर्वे समूह,भारत में आर्थिक बृद्धि एवं विकास,गहराते अन्तर्विरोध 1991–2011
35. चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अंतर दो लाईनो के संघर्ष का इतिहास,अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन,आनंद प्रसाद भट्ट,13 ए,कामना सेक्टर 2 ई,वैशाली,गाजियावाद–201010.
36. मीडिया शोध का स्वरुप,खंड–1,पत्रकारिता एवं जनसंचार में पारास्नातक,उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय

37. अन्तर सांस्कृतिक संचार,खंड–1,पत्रकारिता एवं जनसंचार में पारास्नातक,उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय
38. अन्तर सांस्कृतिक संचार के विभिन्न आयाम,खंड–4,पत्रकारिता एवं जनसंचार में पारास्नातक, उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय
39. सिंह, डॉ श्रीकांत, संप्रेषण प्रतिरूप एवं सिद्धांत, भारती पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स लखेश्वर कांप्लेक्स, इलाहाबाद रोड, फैजाबाद, 224001 उत्तर प्रदेश.

नक्सल प्रभावित क्षेत्र में संप्रेषण : वर्तमान स्थिति और प्रभाव

(छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग के विशेष संदर्भ में)

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना

अध्याय –1 नक्सल प्रभावित क्षेत्रों का परिचयात्मक अध्ययन

क– राष्ट्रीय संदर्भ में

ख– छत्तीसगढ़ के संदर्भ में

ग– बस्तर संभाग के संदर्भ में

अध्याय –2 शोध पद्धति

क. शोध का उदेश्य,क्षेत्र एवं महत्व

ख– साहित्य पुनार्वलोकन

ग– शोध पद्धति

घ– शोध की सीमाएं

अध्याय –3 बस्तर संभाग में नक्सलवाद की समस्या एवं आदिवासी

क– नक्सलवाद की प्रमुख समस्या

ख– आदिवासी आंदोलन

ग– पुलिस की भूमिका एवं मानवाधिकार

अध्याय –4 बस्तर संभाग में संप्रेषण की स्थिति का विशिष्ट अध्ययन

क– संप्रेषण माध्यम एवं उपकरण

ख– संप्रेषण प्रक्रिया एवं पारंपरिक माध्यम

ग– विकास में संप्रेषण की भूमिका

अध्याय –5 नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में संप्रेषण के प्रभावों का अध्ययन

क– सामाजिक,राजनैतिक एवं सांस्कृतिक

ख– मनोवैज्ञानिक

ग– आर्थिक

अध्याय –6 निष्कर्ष एवं सुझाव

- संदर्भ सूची
- परिशिष्ट
- अनुसूची का प्रारूप